अंतर्मन का अवलोकन

सामाजिक नागरिक संस्थाओं के लिए रणनीतिक संचार के आयाम

स्वयं से साक्षात्कार के लिए अनुसूची

शीर्षक

अंतर्मन का अवलोकन

सामाजिक नागरिक संस्थाओं के लिए रणनीतिक संचार के आयाम

स्वयं से साक्षात्कार के लिए अनुसूची

संयोजन : सचिन कुमार जैन

संपादन : गुरुशरण सचदेव, भूपेन्द्र शर्मा

सहयोग : पंकज शुक्ला, राकेश मालवीय, विश्वम्भर त्रिपाठी, पूजा सिंह

वर्ष – 2025 / **प्रतियां** – 500

प्रकाशक – विकास संवाद
ए–5, आयकर कॉलोनी, जी–3, गुलमोहर, बावड़िया कलां, भोपाल
फोन : 0755–4252789, ई–मेल : office@vssmp.org
वेबसाईट : www.vssmp.org

ISBN - 978-81-992588-2-2

मुद्रक – अमित प्रकाशन

सामाजिक नागरिक संस्थाएं और रणनीतिक संचार

स्वयं के बारे में, स्वयं के नज़रिए से

स्वयं की पहचान के लिए

स्वयं का परीक्षण

परखना

स्वयं के लिए

स्वयं का

स्वयं के द्वारा

पृष्ठभूमि

- सामाजिक नागरिक संस्थाएं मानव समाज के इतिहास में हमेशा से बेहतर समाज के निर्माण के लिए भूमिकाएं निभाती आईं हैं। ऐतिहासिक प्रमाण भी यह बताते हैं कि राज्य व्यवस्था और समाज व्यवस्था की विसंगतियों को बदलने का साहस सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दिखाया है।
- सामाजिक बदलाव की पहल का उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक सत्ता हासिल करना नहीं होता है। सपना तो एक समतामूलक, न्यायपरक और शोषण–गरीबी से मुक्त समाज की स्थापना का होता है।
- हम जब वर्तमान कालखंड पर नज़र डालते हैं, तब यह समझ बनती है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस प्रश्न पर भी गहराई से विचार करना चाहिए कि उनके बारे में व्यापक समाज में किस तरह का कथानक बना है और क्यों?
- इस प्रश्न पर विचार करना इसलिए जरूरी है क्योंकि बदलाव की पहल को सार्थक परिणाम तक पहुंचाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व होता है भरोसा और भूमिका की स्पष्टता। अगर सामाजिक नागरिक संस्थाएं समाज का भरोसा अर्जित नहीं कर पाती हैं, तो रचनात्मक बदलाव का सपना अधूरा रह जाने की आशंका है।
- भरोसा कई स्तरों पर बनता है। व्यक्ति के व्यवहार से, संस्था के ढाँचे से, परस्परता, पारदर्शी और जवाबदेय व्यवहार से, विषय की समझ से, सहयोग और संवाद की प्रक्रिया से।
- जब बात सामाजिक नागरिक संस्थाओं की आती है तब यह आंकलन और विश्लेषण करना जरूरी हो जाता है कि संस्थाओं के समुदाय में परस्परता, पारदर्शिता, समता और समानता, जवाबदेही, प्रतिबद्धता और सामूहिकता के मूल्यों का व्यवहार कैसे हो रहा है?

- यह समझना महत्वपूर्ण है कि सामाजिक नागरिक पहल को उनकी प्रतिबद्धता (बेहतर समाज के निर्माण का सपना) और मूल्य का व्यवहार (समता, न्याय, बंधुता, व्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच, पारदर्शिता, जवाबदेयता आदि) को प्रासंगिक बनाते हैं, कोई पुरस्कार या प्रमाणपत्र नहीं!
- सामाजिक नागरिक समुदाय को यह आत्मबोध होना जरूरी है कि वे समाज की समस्याओं को खुद हल नहीं करते हैं, स्वयं बदलाव नहीं लाते हैं।
- सामाजिक नागरिक संस्थाएं उन संस्थाओं, प्रक्रियाओं और एजेंसी को स्थापित करते हैं, जिनका समाज में अभाव है और जिनसे समस्याएं हल होती हैं और बदलाव आता है।
- तीन भागों के इस पत्रक का उद्देश्य किसी संस्थागत आदर्शवाद को स्थापित करना या किसी तरह का अपराध बोध पैदा करना नहीं है। इसका उद्देश्य सामाजिक नागरिक संस्थाओं को अपने उद्देश्यों और मूल्यों के साथ जुड़ाव के लिए तैयार करना है। आत्मावलोकन और स्वयं की समीक्षा सामाजिक नागरिक समूह की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसीलिए यह पत्रक तैयार किया गया है।
- यह पत्रक इस विश्वास पर आधारित है कि सामाजिक नागरिक समूहों के सामने खड़ी प्रासंगिकता की चुनौतियों का सामना केवल बाहरी राजनीतिक व्यवस्था को देखते हुए नहीं किया जा सकेगा। जरूरी यह भी है कि भीतरी राजनीतिक व्यवस्था की भी समीक्षा की जाए।
- हम कुछ सवालों से रूबरू होंगे। इनके जवाब हमें किसी और को नहीं, बल्कि बस अपने आपको देने हैं। बिना किसी हिचक के और बिना रंग रोगन के जवाब देंगे तो हम बेहतर भूमिका निभा पायेंगे।

1 संस्थागत संस्कृति और व्यवस्थाएं

संस्था की पहचान और स्वीकार्यता उसके काम से बने, इसके पहले उसकी आभा का निर्माण उसकी भीतरी व्यवस्था और संस्थागत संस्कृति से होना शुरू हो जाता है।

संस्था की नीतियां कैसी हैं? संस्था के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध कैसे हैं? संस्था की व्यवस्था में कितनी पारदर्शिता और परस्परता है? संस्था और संस्था के सदस्यों की भाषा और सोच में कितना साझापन है?

ये सब दिखाई देता है। यह सब महसूस किया जा सकता है। अतः जरूरी है कि देश-दुनिया में सामाजिक नागरिक संस्थाओं की पहचान और प्रासंगिकता के संरक्षण के लिए संस्थागत संस्कृति और व्यवस्थाओं के प्रति संवेदनशील हुआ जाए।

(1)

आपको और आपकी संस्था के सभी सदस्यों को समाज और व्यवस्था के निर्माण और बदलाव में सामाजिक नागरिक संस्थाओं की भूमिका और महत्व की जानकारी है?

1. पूरी तरह से
2. ज्यादातर समझ है
3. सीमित समझ है
4. इसके बारे में सोचा नहीं

(2)

आपको/संस्था के सदस्यों को किसी सार्वजनिक मंच पर सामाजिक संस्था के रूप में अपने आप को प्रस्तुत करते समय अपने भीतर अपने काम के महत्व/गर्व का अहसास और पूरा आत्मविश्वास होता है?

1. कभी नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(3)

आपको/संस्था को सामाजिक कार्य की भूमिका निभाने के लिए किस विशेष घटना/परिस्थितियों ने 'प्रेरित/प्रभावित' किया; इसके बारे में पूरी तरह से स्पष्टता है? क्या इसके बारे में संस्था की टीम में चर्चा होती है?

1. नहीं, वस्तुतः नहीं
2. कुछ हद तक
3. काफी हद तक, अधिकतर
4. हाँ, हमेशा

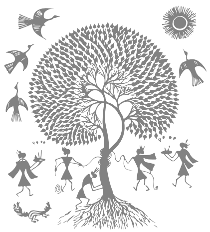

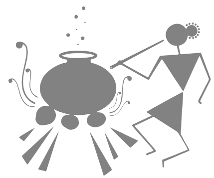

(4)

क्या आपको/संस्था को यह स्पष्टता है कि आप/संस्था समाज की कौन सी समस्या को हल करने की कोशिश कर रहे हैं और क्यों? यह कोशिश समाज में क्या बदलाव ला सकती है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर समझ है
4. पूरी तरह से सजगता है

(5)

आप अपने विषय के बारे में हमेशा नई जानकारी हासिल करने का प्रयास करते हैं? हर हफ्ते कोई नया लेख/शोधपत्र/पुस्तिका आदि पढ़ते हैं?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

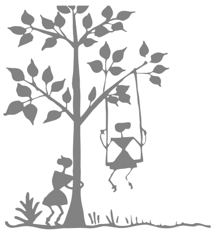

(6)

क्या आप दूसरे व्यक्तियों/संस्थाओं की सीखों और काम के बारे में जानने और उनसे सीखने के लिए तत्पर रहते हैं? जानने-सीखने का प्रयास करते हैं?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(7)

क्या संस्था में यह चर्चा की जाती है और आंकलन किया जाता है कि व्यापक समाज में संस्था की छवि और पहचान क्या है?

1. नहीं
2. कभी–कभी, कुछ हद तक
3. अधिकतर
4. हमेशा

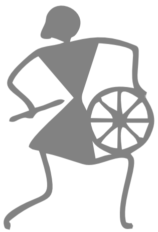

(8)

क्या आप यह सोचते हैं कि सामाजिक संस्थाओं की बेहतर समाज और बेहतर व्यवस्था बनाने में अहम् भूमिका रही है, लेकिन अब समाज और व्यापक व्यवस्था में उसकी पहचान सकारात्मक नहीं है?

1. कभी नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(9)

क्या संस्था में अपने पूर्व के काम के परिणामों, अनुभवों और सीखों को इकट्ठा (संस्थागत स्मृति) करने की व्यवस्था बनाई गई है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ी बहुत
3. ज्यादातर
4. सभी अनुभव/सीखें संग्रहीत हैं

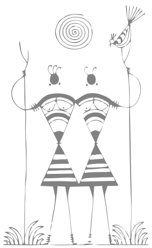

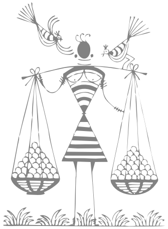

(10)

क्या संस्था के भीतर और कार्यक्रमों से सम्बंधित नीतियों–व्यवस्था में बच्चों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों, भिन्न सक्षमों और समाज में भेदभाव–उपेक्षा से प्रभावित समूहों के लिए प्रावधान हैं और सभी में इनके प्रति सजगता है?

1. नहीं
2. बहुत सीमित
3. प्रावधान हैं, अधिकांश सजग हैं
4. प्रावधान और उनकी वृहद स्वीकार्यता है

(11)

अगर कभी कोई व्यक्ति आपसे/संस्था से सूचना के अधिकार के तहत संस्था के संसाधनों/फंडिंग और उसे उपयोग से सम्बंधित सूचना मांगे, तो आप की स्थिति क्या होगी ?

1. बेहद असहजता होगी और जानकारी नहीं देंगे
2. असहजता होगी और शंका होगी
3. असहजता होगी, पर जरूरत पड़ने पर जानकारी देंगे
4. सहज रहेंगे और जानकारी प्रदान करेंगे

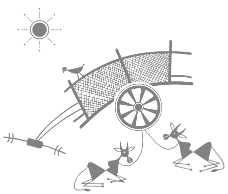

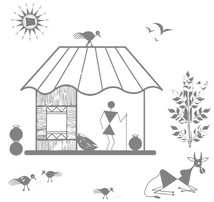

(12)

क्या संस्था के सभी कार्यकर्ताओं को संस्था की परियोजनाओं के बजट की 'पूरी जानकारी' होती है और इसके उपयोग में उनकी सहभागिता होती है ?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर
4. सभी जानकारियां और सहभागिता होती है

(13)

क्या आपने/संस्था ने विज़न/मिशन और कार्यक्रमों में रणनीतिक संचार/प्रभावी संचार को एक केंद्रीय रणनीति के रूप में शामिल किया है?

1. नहीं किया
2. जरूरत होने पर शामिल करते हैं
3. नीति में शामिल नहीं; पर समझ है
4. संस्थागत नीति है

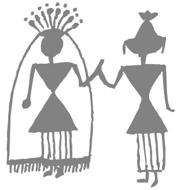

(14)

आप या आपकी संस्था की टीम के सदस्यों की अनुदान देने वाली संस्थाओं, संस्था की कार्यकारिणी के सदस्यों और संस्था का नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों तक सहज पहुँच है?

1. केवल नेतृत्व करने वालों की पहुँच है
2. समन्वयकों की पहुँच है
3. ज्यादातर लोगों की पहुँच है
4. सभी की पहुँच है

(15)

आप या आपकी संस्था का नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों/समूह के संस्था में काम करने वाले व्यक्तियों के साथ सकारात्मक और परस्पर सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध हैं?

1. नहीं हैं
2. स्तर के अनुसार व्यवहार है
3. अधिकतर सकारात्मक हैं
4. मानवीय रिश्तों को महत्व देना संस्थागत मूल्य है

(16)

आप या आपकी संस्था में 'किसी भी भूमिका' को निभाने वाला व्यक्ति अपनी 'असहमति' को व्यक्त कर सकता है और उसकी असहमति पर कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं दी जाती है?

1. कभी नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(17)

आप या आपकी संस्था को अपनी क्षमताओं में भरोसा है कि वह वर्तमान में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए नई चुनौतियां के तात्कालिक समाधान खोज सकती है?

1. बिलकुल नहीं
2. कम
3. काफ़ी–कुछ
4. पूर्णतः

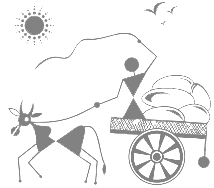

(18)

आप या आपकी संस्था जिस विषय/समस्या के समाधान के लिए काम कर रहे हैं, आप उसके विविध पहलुओं पर नया पक्ष और रचनात्मक दृष्टिकोण/आईडिया प्रस्तुत करते हैं?

1. कभी नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(19)

आप या आपकी संस्था के कोई भी प्रतिनिधि जब अपने कार्यक्रमों/परियोजनाओं की प्रस्तुति करते हैं, तब गतिविधियों से ज्यादा अपने दृष्टिकोण और वैचारिक आधार को महत्व देते हैं?

1. हां
2. प्राय:
3. कुछ हद तक
4. नहीं, ऐसा नहीं है

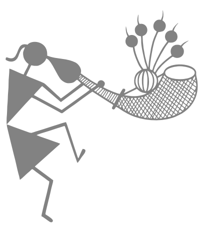

(20)

आपकी संस्था के द्वारा बनाई गई संस्थागत नीतियों और प्रक्रियाओं से सभी टीम सदस्य वाकिफ हैं और सजगता के साथ उनका प्रतिबद्धता के साथ अनुपालन करते हैं?

1. कोई नहीं
2. कुछ लोग
3. अधिकांश लोग
4. हां, सभी सदस्य

(21)

क्या आपकी संस्था में कार्यक्रम की निगरानी और मूल्यांकन की व्यवस्था बनी हुई है? क्या आप बता सकते हैं कि आपके अब तक के कार्यक्रमों के क्या परिणाम आये हैं और क्या प्रभाव पैदा हुए हैं?

1. कोई व्यवस्था नहीं है
2. व्यवस्था है, लेकिन प्रभावी नहीं है
3. व्यवस्था है, कुछ हद तक प्रयोग होता है
4. व्यवस्था है और उसका प्रभावी क्रियान्वयन होता है

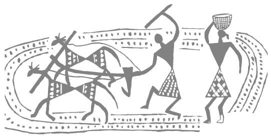

(22)

आपका/संस्था के सदस्यों का संस्था की पहचान के प्रति नज़रिया क्या है?

1. यह एक निजी संस्था है
2. यह एक व्यक्ति–केन्द्रित संस्था है
3. पहचान स्पष्ट नहीं है
4. यह एक सार्वजनिक संस्था है

इन बिन्दुओं से गुज़रते हुए आपको क्या महसूस हुआ?

क्या सामाजिक नागरिक समूह के दृष्टिकोण से ये प्रश्न महत्वपूर्ण हैं?

इन प्रश्नों से उभर कर आ रहे आयामों को अपनाने के लिए आपकी पहल क्या होगी?

2 सामाजिक सम्बद्धता

सामाजिक नागरिक संस्थाओं का दायरा केवल उसके कार्यक्रमों के सहभागी समूह तक सीमित नहीं रह सकता है। हम जिस कालखंड में आ गए हैं, वहां समाज के व्यवहार, देश की नीतियों, आधारभूत मूल्यों और जीवन शैली को कई कारक प्रभावित करते हैं।

अगर हमें देश में बेहतर नीतियों की आवश्यकता महसूस होती है, तो हमें उन लोगों और समुदायों का भी सहयोग चाहिए, जो संभवत: संस्थाओं के कार्यक्रमों के प्रत्यक्ष हितग्राही नहीं हैं। इसके लिए उनका संस्थाओं के साथ जुड़ाव जरूरी है और यह जुड़ाव तभी स्थापित हो सकता है, जब व्यापक समाज, विभिन्न समुदाय सामाजिक नागरिक संस्थाओं के बारे में रचनात्मक और सकारात्मक नजरिया रखते होंगे।

अत: जरूरी है कि सामाजिक नागरिक संस्थाएं इस प्रश्न के प्रति सजग और संवेदनशील हों कि व्यापक समाज और व्यापक व्यवस्था के साथ उनका संवाद कितना और कैसा है?

(23)

क्या आपको/संस्था को ठीक जानकारी है कि संस्था के बारे में लोग क्या जानते हैं? संस्था के बारे में उनकी (आम लोगों/समूहों/संस्थाओं की) धारणा क्या है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ी बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से, संस्था को उपयोगी समझा जाता है

(24)

क्या आप / आपकी संस्था के प्रतिनिधि समसामयिक / सामाजिक / आर्थिक / राजनीतिक मुद्दों पर अपना नज़रिया नियमित रूप से व्यक्त करते हैं?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा–बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से

(25)

क्या आप अपने परिवार/रिश्तेदारों को यह बता पाए हैं कि सामाजिक कार्यकर्ता / सामाजिक संस्था क्या काम करती है, क्यों काम करती है और सामाजिक संस्थाओं का होना क्यों जरूरी है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से स्पष्ट कर पाए हैं

(26)

क्या मीडिया प्रतिनिधि, कॉलेज के छात्र-छात्राएं या जनप्रतिनिधि आपके/संस्था के काम को जानते हैं और उन्हें आपका मकसद/उद्देश्य समझ आता है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से

(27)

क्या महाविद्यालय/विश्वविध्यालय के अध्यापक/शोध अध्येता आपके/संस्था के काम से परिचित हैं और आपके साथ शोध करना चाहते हैं?

1. नहीं
2. कभी कभार
3. अधिकतर
4. हमेशा

(28)

आपकी/सामाजिक संस्था की पहल के कारण जो बदलाव आया है, क्या उस बदलाव के बारे में आपके/संस्था के आसपास के लोगों/ सामाजिक संगठन/ प्रशासन/मीडिया को पूरी जानकारी है?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ी बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से

(29)

अगर अपने समूह से इतर, व्यापक सामाजिक कार्यकर्ताओं या सामाजिक संस्थाओं के सामने कोई समस्या आती है, तब क्या आप उनके पक्ष में खड़े होंगे ?

1. नहीं
2. हाँ, संभवत:
3. ज्यादातर संभावना
4. पूरी तरह से साथ खड़े होंगे

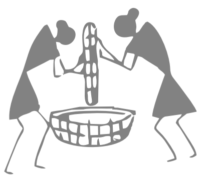

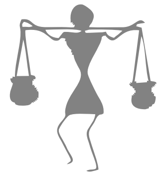

(30)

अगर सामाजिक कार्यकर्ताओं या सामाजिक संस्था के रूप में आपके सामने कोई समस्या आती है, तब क्या समुदाय या अन्य संगठन आपके पक्ष में खड़े होंगे ?

1. बिलकुल नहीं
2. न्यूनतम संभावना
3. ज्यादातर संभावना
4. पूरी तरह से साथ खड़े होंगे

(31)

आप या आपकी संस्था के सभी सदस्य अपने निजी दायरों/निजी जीवन में भी उस भाषा और मूल्यों का व्यवहार करते हैं, जिन्हें संस्था ने अपनाया है और जिनके प्रति संस्था प्रतिबद्ध है?

1. कभी नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(32)

क्या आपको यह पता होता है या जानने की इच्छा होती है कि व्यक्ति जो बात कह रहा है या व्यवहार कर रहा है, उसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारण/आधार क्या हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(33)

आपके/संस्था की व्यवस्था और व्यवहार से समाज/सरकार/युवाओं/आम लोगों को यह समझ आ जाता है कि हम लैंगिक, जातीय और साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं करते हैं?

1. नहीं
2. कुछ हद तक
3. ज़्यादातर
4. हमेशा

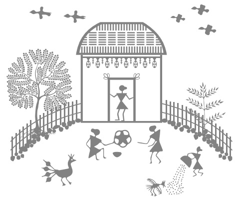

(34)

क्या संस्था के साथ युवा, छात्र-छात्राएं और अन्य लोग स्वैच्छिक रूप से काम करने के लिए जुड़ते हैं?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

इन बिन्दुओं से गुज़रते हुए आपको क्या महसूस हुआ?

क्या सामाजिक नागरिक समूह के दृष्टिकोण से ये प्रश्न महत्वपूर्ण हैं?

इन प्रश्नों से उभर कर आ रहे आयामों को अपनाने के लिए आपकी पहल क्या होगी?

3 रणनीतिक संचार के आयाम

सामाजिक नागरिक संस्थाओं के संचार, संवाद और कहानी कहन के प्रयास अकसर उनके कार्यकमों और लक्षित समुदायों की सीमाओं के भीतर तक सीमित रह जाते हैं। उस संचार प्रणाली में भी ऐसे सन्देश और भाव अनुपस्थित रहते हैं, जो सामाजिक नागरिक संस्थाओं की भूमिका और उनके सपनों के बारे में समझ बनाने में मददगार हों।

अगर समुदायों को स्वास्थ्य, पोषण, टिकाऊ कृषि, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता, छुआछूत और भेदभाव की समाप्ति से सम्बंधित सन्देश देने भी हों, तब भी सबसे पहले सामाजिक नागरिक संस्थाओं की स्वीकार्य पहचान होना जरूरी होता है।

समाज तभी किसी सन्देश में विश्वास करता है, जब वह सन्देश देने वाले में विश्वास करता है।

रणनीतिक संचार का अर्थ होता है हर उस व्यक्ति, समूह, संस्थान के साथ तैयारी से संवाद करना, जो सामाजिक नागरिक संस्था के सपने को पूरा करने में योगदान दे सकता है। इसका परिणाम यह होता है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं की प्रासंगिकता और स्वीकार्यता में स्थायित्व आता है।

(35)

आप अपने काम, बातचीत, प्रस्तुतिकरण, लेखन में जिन शब्दों का उपयोग करते हैं, क्या उनके अर्थों और परिभाषाओं से अच्छे से परिचित होते हैं ?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

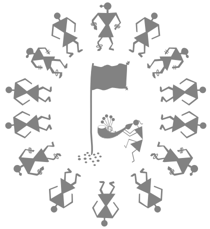

(36)

अगर आपसे/संस्था से कहा जाए कि आप अपने सामाजिक काम के अनुभवों की कहानियां सुनाएं/बताएं, तो क्या आप इसके लिए तैयार होंगे ?

1. नहीं
2. थोड़े बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से तैयार

(37)

क्या आपको/संस्था को यह महसूस होता है अपने कार्यक्रम के लक्षित हितग्राहियों से अलग/भिन्न लोगों/समुदायों (प्रभावशाली लोग, पत्रकार, साहित्यकार आदि) से नियमित रूप से संचार करना बहुत जरूरी होता है?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

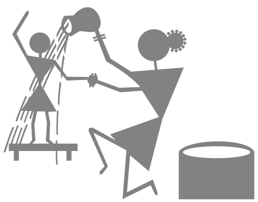

(38)

क्या आप/संस्था अपने कार्यक्रम के 'परिणामों को प्रभावित करने' वाली संस्थाओं (कॉलेज, मीडिया, जनप्रतिनिधि, राजनीतिक प्रतिनिधियों, प्रभुत्व संपन्न संगठनों आदि) से नियमित रूप से संचार करते हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(39)

आप/संस्था के प्रतिनिधि ऐसी प्रस्तुति/प्रस्तुतिकरण करते हैं, जिसमें समस्या के विवरण के साथ ही समस्या का ऐसा समाधान भी प्रस्तुत करते हैं, जिसमें बुनियादी मानवीय मूल्य भी प्रदर्शित होते हैं?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

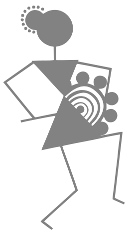

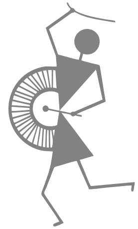

(40)

क्या आप अपने/संस्था के सपने/उद्देश्यों को युवाओं को ऐसे समझा सकते हैं, जिससे वे भी उन उद्देश्यों को अंगीकृत कर सकें?

1. वस्तुतः नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(41)

क्या संस्था ने अपने विषय/लक्षित समस्या पर ऐसा कोई दस्तावेज/रिपोर्ट बनाई है, जिससे दूसरों को विषय के सामाजिक-आर्थिक-नीतिगत आयामों समझने में मदद मिले ?

1. विश्लेषण नहीं किया
2. कभी किया था, खोजना होगा
3. कभी दस्तावेज बनाया था, अपडेट नहीं किया
4. विश्लेषण करके दस्तावेज बनाया और नए रूप में उपलब्ध

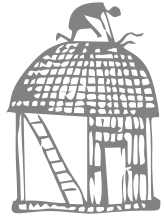

(42)

क्या अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं/ नेटवर्क के साथ आपका/संस्था का नियमित संवाद होता है और सहज रिश्ते हैं ?

1. कभी नहीं/नगण्य
2. कभी-कभी/थोड़े
3. अधिकतर/प्रभावी
4. हमेशा/प्रगाढ़

(43)

जब भी आप/संस्था के सदस्य किसी शासकीय प्रतिनिधि/विभाग/जनप्रतिनिधि/ युवाओं के समूह के साथ बातचीत करते हैं, तब सबसे पहले संस्था के औचित्य, उद्देश्य, मूल्य, सपने और प्रतिबद्धता के बारे में कुछ बातें कहते हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

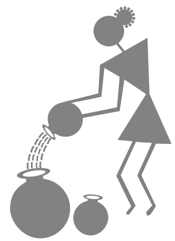

(44)

क्या अन्य संस्थाओं के लोगों ने आपसे यह कहा है कि उन्हें आपके/संस्था के कामों के बारे में नियमित रूप से जानकारी मिलती रहती है?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(45)

क्या आप/संस्था अपनी टीम के सदस्यों को अपने विषय के बारे में अपने कार्यक्रम/समुदाय से अलग पहलुओं पर प्रस्तुतिकरण करने या नए अनुभवों/सीखों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करते हैं ?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

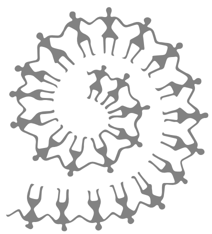

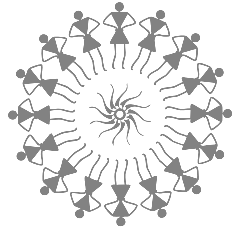

(46)

क्या आप/संस्था के सदस्य अपनी पूरी बात को दो मिनिट में स्पष्ट अर्थ के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं ?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(47)

क्या संस्था ने अपने सोशल मीडिया के पेज बनाए हैं? उन्हें हर दिन अपडेट किया जाता है? यह विश्लेषण किया जाता है कि लोग उन्हें, देख, पढ़ और समझ रहे हैं और जुड़ रहे हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

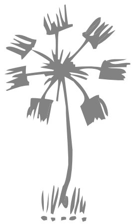

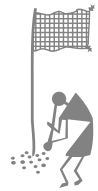

(48)

अगर आपको/संस्था को यह सूचना मिले कि शासन के वरिष्ठ अधिकारियों की समिति के सामने अपने कार्यक्रम के मॉडल, सीखों और परिणामों के बारे में कल एक प्रस्तुतिकरण करना है। क्या आप इसके लिए पूरे आत्मविश्वास से तैयार रहेंगे?

1. नहीं
2. कुछ हद तक
3. काफ़ी हद तक
4. हाँ

(49)

क्या आप/संस्था के सदस्य अपनी प्रस्तुति में तथ्यों/आंकड़ों का प्रभावी इस्तेमाल करते हैं?

1. कह नहीं सकते
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हाँ, बिल्कुल

(50)

क्या आप/संस्था अपने विषय को वीडियो डाक्यूमेंट्री के माध्यम से स्वयं प्रस्तुत करने में सक्षम पाती है?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(51)

क्या आपने/संस्था ने अपनी टीम/नेतृत्व को अध्ययन करने, ध्यान से सुनने, गहन अवलोकन करने और समाज से सीखने के लिए प्रेरित किया है ?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

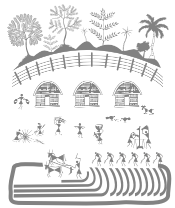

(52)

क्या आप/संस्था यह जानते हैं कि संस्था की कार्यशैली/काम करने के तौर तरीकों से संस्था द्वारा किन मूल्यों के पालन किये जाने का सन्देश जाता है ?

1. नहीं, अभी तक नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर समझ है
4. पूरी तरह से सजगता है

(53)

आप या आपकी संस्था अक्सर अपने विशिष्ट संसाधनों या नवाचार के प्रयासों और संभावित समाधान की जानकारी समाधान या समाज हित के लिए दूसरी संस्थाओं से साझा करते हैं और साझा पहल करने की कोशिश करते हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

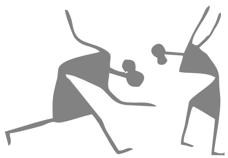

(54)

आप या आपकी संस्था नई परियोजनाओं या पहलों को आकार देने, क्रियान्वित करने, शोध करने या उन्हें विस्तार देने के लिए बाहरी संस्थाओं, जैसे शैक्षणिक संस्थाओं, विषय विशेषज्ञों, शासकीय विभागों या अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ साझेदारी करते हैं?

1. नहीं
2. कभी–कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(55)

नवाचार के कार्यक्रमों में, आप या आपकी संस्था यह सुनिश्चित करते हैं कि संस्था के भीतर, अन्य संस्थाओं और इसमें रूचि रखने वाले हितधारकों के साथ समय-समय पर कार्यक्रम की प्रगति और सीखों की जानकारी साझा की जाए?

1. नहीं
2. कभी-कभी
3. अधिकतर
4. हमेशा

(56)

क्या आप उन संसाधन संपन्न व्यक्तियों/ संस्थाओं को पहचान पा रहे हैं, जिनके पास सामाजिक नागरिक पहल के लिए योगदान देने के लिए संसाधन हैं और वे योगदान करना चाहते हैं?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर समझ है
4. पूरी तरह से सजगता है

(57)

क्या आप यह समझ पाते हैं कि सामाजिक बेहतरी/सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के संसाधन के लिए सहायता करने वाले/ योगदान देने वाले व्यक्ति/संस्थाएं सामाजिक मुद्दों/ समस्याओं के बारे में क्या सोचते हैं और उनकी प्राथमिकताएं क्या हैं?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़ा बहुत
3. ज्यादातर समझ है
4. पूरी तरह से समझ है

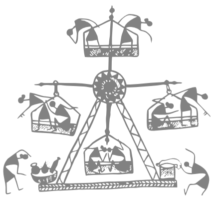

(58)

क्या आप स्पष्ट रूप से यह बता पाने में सक्षम हैं कि संस्था क्या हासिल करना चाहती है और किसी भी अन्य व्यक्ति/संस्था को उसमें योगदान क्यों करना चाहिए?

1. बिलकुल नहीं
2. थोड़े बहुत
3. ज्यादातर
4. पूरी तरह से तैयार

(59)

क्या हम यह समझते हैं कि इस वक्त की दुनिया और सामाजिक नागरिक पहल के लिए योगदान देने वाले व्यक्ति/संस्थाएं इन शब्दों को कैसे परिभाषित करती हैं– लैंगिक समानता, गरीबी, न्याय, स्वास्थ्य, विकास और पर्यावरण ?

1. कभी सोचा नहीं
2. कभी कभार सोच
3. इसके बारे में सोचते और चर्चा करते हैं
4. इसके बारे में सोचते हैं और इसे अपनी रणनीति में जोड़ते हैं

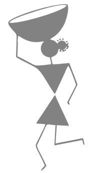

(60)

क्या यह योजना बनाई गई है कि अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए अगले पांच साल में हमारे कार्यक्रम क्या होंगे, इन पांच सालों में नीति–शासन व्यवस्था में किस तरह के बदलाव आ सकते हैं और ऐसे में उन कार्यक्रमों के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता क्या है और वे संसाधन कहां से जुटाए जायेंगे ?

1. इसके बारे में सोचा नहीं
2. योजना नहीं है, लेकिन कभी कभी सोचते हैं
3. योजना है, कभी–कभी प्रयोग होता है
4. योजना है और उसका प्रभावी क्रियान्वयन होता है

इन बिन्दुओं से गुज़रते हुए आपको क्या महसूस हुआ?

क्या सामाजिक नागरिक समूह के दृष्टिकोण से ये प्रश्न महत्वपूर्ण हैं?

इन प्रश्नों से उभर कर आ रहे आयामों को अपनाने के लिए आपकी पहल क्या होगी?

हमारे ज्यादातर उत्तर में 1 आया, 2 आया, 3 आया या 4 आया?

इन प्रश्नों से गुज़र कर हमें क्या महसूस होता है?

हम कहाँ हैं?

अगर हमारे उत्तर में 1 और 2 का स्थान ज्यादा है, तो इसका अर्थ है कि

- अभी हम सामाजिक नागरिक पहल के वास्तविक स्वरूप को अपना नहीं पाए हैं।
- संस्थागत मूल्य अपनाए नहीं गए हैं।
- समाज और व्यापक संस्थाओं के साथ हमारा कोई रिश्ता नहीं है।
- सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अस्तित्व और प्रासंगिकता से जुड़ी चुनौतियों पर हम सजग नहीं हैं।

अगर हमारे उत्तर में 3 का स्थान ज्यादा है, तो इसका अर्थ है कि

- अभी हम सामाजिक नागरिक पहल के वास्तविक स्वरुप को समझने लगे हैं।
- संस्थागत मूल्यों को अपनाने की प्रक्रिया शुरू कर चुके हैं।
- समाज और व्यापक संस्थाओं के साथ रिश्ता जोड़ने लगे हैं।
- सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अस्तित्व और प्रासंगिकता से जुड़ी चुनौतियों पर हम सजग हो रहे हैं।

अगर हमारे उत्तर में 4 का स्थान ज्यादा है, तो इसका अर्थ है कि

- हमने सामाजिक नागरिक पहल को समझ और दृष्टिकोण के साथ अपना लिया है।
- संस्थागत मूल्यों को व्यवहार में ला रहे हैं।
- समाज और व्यापक संस्थाओं के साथ गहरा रिश्ता बना हुआ है।
- सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अस्तित्व और प्रासंगिकता से जुड़ी चुनौतियों पर हम सजग हैं और उसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

प्रश्नों के अर्थ

प्रश्न यह है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं की कथानक और पहचान बनाने में भूमिका का विस्तार कैसे हो?

सामाजिक नागरिक संस्थाओं के बारे में कथानक बनाने का मंतव्य 'प्रचार' नहीं, बल्कि युवाओं, समाज, अकादमिक संस्थाओं, जनप्रतिनिधियों, संवाद कर्मियों, शासन व्यवस्था के साथ सघन और प्रभावी संवाद स्थापित करना है। हम जिन सवालों से होकर गुजरे हैं, उन सवालों के कुछ गहरे अर्थ हैं। ये अर्थ हैं सामाजिक नागरिक संस्थाओं की संस्कृति, संस्कार और पहचान के। समाज के निर्माण में जिस तरह की महत्वपूर्ण भूमिकाएं नागरिक समूह निभाते हैं, उस भूमिका को याद रखना होगा और संस्थागत संस्कृति को सजगता से आकार देना होगा। इस प्रक्रिया में रणनीतिक संचार बेहद अहम् भूमिका निभाता है। रणनीतिक संचार और कहानी कहन केवल कौशल नहीं है, केवल तकनीक नहीं है, बल्कि यह कथानक निर्माण करने वाला आधारभूत तत्व है। इन सवालों के अर्थ क्या हो सकते हैं, इसका उल्लेख अगले भाग में किया गया है। वास्तव में इन प्रश्नों को उत्तर से नहीं परखा जाना चाहिए। इन प्रश्नों को नज़रिए, प्रतिबद्धता, मूल्यों और संस्थागत संस्कृति के नज़रिए से परखा जाना चाहिए, इसीलिए आग्रह है कि इन अर्थों को अपनी भाषा और अपना भाव प्रदान कीजिये।

संदर्भित प्रश्नों का सार

भाग – 1 संस्थागत संस्कृति और व्यवस्थाएं

1) सामाजिक नागरिक संस्थाओं ने भारत के सामाजिक–आर्थिक बदलाव में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी प्रतिबद्धता के अनुपालन में सामाजिक कार्यकर्ताओं और सुधारकों ने अपने निजी हितों, सामुदायिक पहचान, सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा और प्रभुत्व को त्याग दिया। जब हम सामाजिक नागरिक संस्थाओं की इस पृष्ठभूमि को इन नज़रियों से जानते हैं, तब अपनी भूमिका को बेहतर तरीके से निभा सकते हैं।

3) हर सामाजिक नागरिक पहल के पीछे कोई न कोई प्रेरित करने वाला कारक होता है। कोई न कोई घटना होती है। उस प्रेरणा को हमेशा ध्यान में रखना जरूरी होता है। वही वास्तव में बीज होता है। उस प्रेरक तत्व को जानना और याद रखना जरूरी होता है, ताकि अगर हम कभी अपनी राह से भटकें, तो वह तत्व हमें भटकने से रोके।

12) जब संस्था की भीतरी व्यवस्था में सहभागिता और पारदर्शिता होती है, तब संस्था के सभी सदस्य, सभी कार्यकर्ता संस्था के उद्देश्यों में भरोसा कर पाते हैं। इसके लिए जरूरी होता है कि संस्था के हर स्तर पर लोगों को संस्था के कार्यक्रमों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं और उपलब्ध संसाधनों की सही–सही जानकारी हो।

4) अपने काम के लक्ष्य/परिणाम के बारे में स्पष्टता होना जरूरी है। अगर यह स्पष्टता नहीं होगी, तो सामाजिक नागरिक कार्यकर्ता/संस्था में भरोसा कैसे स्थापित होगा और बिना भरोसे के सामाजिक काम नहीं होते हैं।

7) संस्था का काम केवल कार्यक्रम संचालित करना ही नहीं है। संस्था को खुद ही यह आंकलन भी करना होता है कि समाज

में उसकी पहचान क्या है? पहचान के विषय को बेकार का विषय नहीं मानना चाहिए। एक तरह से यह अपनी पहचान और समाज के भरोसे को परखने का विषय होता है।

5) सामाजिक कार्यकर्ता/सामाजिक संस्था की पहचान तभी बनती है, जब वह अध्ययन करना है, विषय के बारे में ज्यादा से ज्यादा और नवीनतम समझ रखता है। अपनी जानकारियों और ज्ञान में वृद्धि करते रहना बहुत जरूरी होता है। यह ध्यान रखना जरूरी है कि जिन मुद्दों पर पहल की जा रही है, उनका केवल एक ही पक्ष नहीं होता है। विषय के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पर्यावर्णीय, सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में समझ होना भी जरूरी होता है।

11) अगर सामाजिक नागरिक संस्था प्रतिबद्धता के साथ समाज के निर्माण के लिए काम कर रही है, तो उसे पारदर्शिता के मूल्य को अपनाना ही चाहिए। जिस तरह संस्थाएं शासन व्यवस्था में पारदर्शिता लाना चाहती हैं, उसी तरह से संस्थागत व्यवस्था में भी उसे पारदर्शिता लाना चाहिए। यह तर्क अस्वीकार्य होना चहिये कि संस्थाओं से सूचना लेकर उसका उपयोग संस्थाओं के विरुद्ध ही किया जा सकता है इसलिए सूचनाएं नहीं दी जाना चाहिए।

8) सामाजिक संस्थाओं का अपना एक संसार है, एक समुदाय है। उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है, संस्थाओं को समाज के साथ अपनी पहचान को स्थापित करने के लिए संवाद करना चाहिए। जब पहचान सकारात्मक नहीं होती है, तब शासन व्यवस्थाएं और राजनीतिक विचार धाराएँ सामाजिक नागरिक संस्थाओं को अप्रासंगिक करने की कोशिश करती हैं।

22) आमतौर पर सामाजिक नागरिक संस्था की स्थापना की पहल किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा की जाती है, लेकिन वास्तव में इसे एक सार्वजनिक संस्था ही माना जाना चाहिए. प्रबंधन के नज़रिए से कुछ लोगों को महत्वपूर्ण भूमिकाएं दी जाती हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होता है कि संस्था को निजी या व्यक्तिगत इकाई मान लिया जाए। आपसी बातचीत में भी जब यह कहा जाता है कि 'यह मेरी संस्था है'; तब इसमें निहित भावना को समझना जरूरी होता है कि यहां सन्दर्भ 'अपनत्व' का है जिसमें समर्पण का भाव परिलक्षित होता है।

10) संस्था समाज में जिन वंचित समूहों के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए पहल कर रही है, क्या उन्हीं वंचित समूहों को संस्था के भीतर स्थान देने की प्रतिबद्धता रखती है? क्या महिलाओं, बच्चों और वंचित समूहों के साथ कोई दुर्व्यवहार, अपमानजनक व्यवहार न हो और उन्हें आवश्यक अवसर मिलें, इसके लिए संस्थागत नीति बनाई जाना चाहिए और उसकी समीक्षा भी होना चाहिए।

2) अपने काम, अपनी संस्था और अपनी भूमिका पर गर्व करना और खुद पर विश्वास होना जरूरी है। यह आत्मविश्वास तभी आता है, जब हम अपनी भूमिका, विषय, उद्देश्य और मूल्यों को गहराई से जानते-समझते हैं।

13) रणनीतिक संचार का अर्थ होता है समाज और राज्य व्यवस्था के भिन्न भिन्न समूहों, संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ संचार होना। यह जरूरी है कि सामाजिक नागरिक संस्थाएं केवल हितग्राहियों के साथ बैठकों या अच्छी-अच्छी बातों के दीवार लेखन को ही संचार नीति न मानें। अगर समाज और शासन व्यवस्था के हर स्तर पर सामाजिक नागरिक संस्थाओं के बारे में जानकारी नहीं होगी, तब नकारात्मक धारणाएं बनेंगी और उनके बारे में नकारात्मक कथानक बनाया जा सकेगा। रणनीतिक संचार को एक स्पष्ट नीति के रूप में संस्था की व्यवस्था में जोड़ना।

6) अलग-अलग लोग, अलग-अलग संस्थाएं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में, भिन्न-भिन्न नज़रियों के साथ पहल करते हैं। उनके अनुभव और सीखें भी अलग तरह के होते हैं। जब वास्तव में उद्देश्य समाज के सकारात्मक बदलाव का होता है, तब अन्य संस्थाओं/व्यक्तिओं की सीखों और अनुभवों से सीखने के लिए मन से तैयार रहना चाहिए। उनकी बातों को ध्यान में रखना और उन पर चिंतन करना चाहिए।

14) इसका अर्थ यह है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं के हर सदस्य या कार्यकर्ता के पास यह विकल्प होना चाहिए कि वह अनुदान देने वाले संस्थाओं या कार्यकारिणी के सदस्यों से संवाद कर सके। जब ऐसा होता है तो अनुदान देने वाली संस्थाओं का भरोसा बढ़ता है।

15) जब समूह में आपसी रिश्ते सहज होते हैं, तब सभी अपनी-अपनी सीखों को साझा करते हैं, अपनी कमजोरियों के बारे में बात कर पाते हैं, एक दूसरे का सहयोग कर पाते हैं। और सभी साथी संस्था के अस्तित्व और पहचान के प्रति सजग रहते हैं। जब रिश्ते सौहार्दपूर्ण नहीं होते हैं, तब संस्था भीतर से कमज़ोर हो रही होती है। सामाजिक नागरिक संस्थाओं में ऐसी व्यवस्था नहीं होना चाहिए कि एक व्यक्ति सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है और अन्य सदस्य उसके प्रति प्रतिबद्ध रहते हों।

20) सामाजिक नागरिक संस्थाओं में कुछ महत्वपूर्ण नीतियां होती हैं। मसलन मानव संसाधन नीति, वित्तीय नीति, हितों के टकराव पर नीति, जेंडर नीति, बाल संरक्षण नीति, समता, समावेश और विविधता की नीति आदि। इन नीतियों के अर्थ क्या हैं? इनके क्रियान्वयन की प्रक्रिया क्या है? ये क्यों महत्वपूर्ण हैं? इन प्रश्नों के उत्तर संस्था के सभी सदस्यों के पास होना चाहिए।

17) हम जिस दौर में हैं, वहां समाज, तकनीक, आकांक्षाओं में बहुत तेजी से बदलाव हो रहा है। राज्य और राजनीतिक व्यवस्था का सामाजिक नागरिक संस्थाओं के प्रति नजरिया अपेक्षाकृत ज्यादा कठोर हो रहा है। ऐसे में कायदे-क़ानून बदलते हैं, संसाधनों की उपब्धता में कमी आती है, आर्थिक संसाधन देने वाली संस्थाओं की रीति-नीति में बदलाव आता है; स्वाभाविक है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं के लिए स्थितियां सहज नहीं रहती हैं। ऐसे में अपने विचार के साथ साथ विचार की रणनीतियों, जोखिमों और अपनी तैयारियों के बारे में हमेशा विचार करते रहना जरूरी होता है।

9) बदलाव और विकास एक प्रक्रिया होते हैं। यह प्रक्रिया अक्सर लम्बे समय तक चलती है। ऐसे में सामाजिक नागरिक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को हर मुकाम पर, व्यवहारिक अर्थों में कहें तो हर साल अपने अनुभवों, सीखों, असफलताओं, नज़रियों, विचारों को विस्तार से दर्ज करना चाहिए ताकि जब दो पांच दस पचास साल बाद उस काम, उस पहल का विश्लेषण किया जाए, तो वास्तविक जानकारियां प्रमाण के साथ उपलब्ध रहें। अगर ऐसा नहीं होगा, तो सामाजिक नागरिक संस्थाओं की भूमिका पर लांछन लगाया जाएगा।

18) कहीं हम केवल समस्याओं की ही बात तो नहीं करते रहते हैं! सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हमारे पास समाधान होना चाहिए। इसके लिए समस्या के विविध आयामों, मूल कारणों, चुनौतियों और संभावनाओं के बारे में गहरा अध्ययन होना चाहिए।

19) यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि लोग-समुदाय-सरकार सामाजिक नागरिक संस्थाओं की गतिविधि से प्रभावित नहीं होते है, बल्कि उनके मूल्यों, प्रतिबद्धता, विषय के बारे में उनकी समझ और दृष्टिकोण से प्रभावित होते हैं। यह सदैव ध्यान में रहना चाहिए कि वास्तव में हमारा उद्देश्य और सपना क्या है? समस्या को हम किस नज़रिये से विश्लेषित करते हैं? समस्या के समाधान के प्रति हमारा नज़रिया क्या है?

21) जब भी किसी कार्यक्रम में आर्थिक संसाधनों का प्रयोग किया जाता है, वहां सघन जवाबदेही की स्थिति पैदा होती है। यह सोचा जाना होता है कि आखिर कार्यक्रम से क्या परिणाम पैदा हुए? जिन बदलावों या बेहतरी की संकल्पना की गई थी, क्या उस दिशा में कोई प्रगति हो रही है या नहीं? इसका अर्थ केवल सफलता की तलाश करना नहीं होता है, बल्कि अपनी सीखों को इकट्ठा करना होता है ताकि आगे का कार्यक्रम बेहतर बनाया जा सके।

16) जब संस्था लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाती है, तब संस्था के किसी भी सदस्य या साथी को किसी विषय या निर्णय पर अपनी असहमति व्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है और उसकी असहमति के एवज में उसे प्रताड़ित नहीं किया जाता है। संस्था के नेतृत्व और प्रबंधन को यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति हमेशा सहमत नहीं होता है और अगर उसे अपनी असहमति व्यक्त करने का अधिकार नहीं मिलता है, तब वह अपने मन में उसे पालता रहता है। इससे परस्परता और भरोसे में कमी आती है।

▲▲▲

भाग – 2

सामाजिक सम्बद्धता

23) सामाजिक कार्यकर्ता/संस्था के बारे में लोग क्या सोचते हैं, यह जानना जरूरी होता है। अगर लोग संस्था को जानते–समझते हैं, तो उसके काम में मदद करेंगे और बाधाएं पैदा नहीं करेंगे। जब संस्था की पहचान होती है, तभी उसके कामों की स्वीकार्यता बनती है।

34) सामाजिक नागरिक पहल का विस्तार तभी होता है, जब स्वैच्छिक रूप से लोग उसके साथ जुड़ें। एक व्यक्ति सपना देखता है और समाज की बेहतरी के लिए पहल करना शुरू करता है, लेकिन बदलाव की पहल में अन्य लोगों का जुड़ाव जरूरी होता है। अगर ऐसा न हो तो अगली पीढ़ी में सामाजिक नागरिक पहल की नेतृत्व करने वाले लोग कहां होंगे? जब तक बच्चों, युवाओं और आम व्यक्तियों को सामाजिक नागरिक संस्थाएं अपने साथ नहीं जोड़ेंगी, तब तक उनका वांछनीय लक्ष्य हासिल होना संभव न हो पायेगा।

25) सबसे करीब/निजी जीवन से जुड़े लोगों को सामाजिक संस्था की भूमिकाओं से अवगत करवाना। अगर सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि अपने आसपास के, करीब के लोगों को ही अपने मकसद से वाकिफ न करवा पायें, कि वास्तव में समाज को, जन प्रतिनिधियों को, विशेषज्ञों और नीति निर्माताें को कैसे जोड़ेंगे अपने साथ?

29) अगर किसी सामाजिक संस्था के प्रति दुर्भावना से कोई कार्यवाही की जाती है या आक्षेप लगाया जाता है, तब अन्य सामाजिक नागरिक संस्थाओं को उनके पक्ष में खड़े होना चाहिए। सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अपने आपसी जुड़ाव प्रभावी नहीं हैं। यह नए दौर की चुनौती है।

27) महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के अध्यापकों/शोध अध्येताओं से संवाद करना और विश्वसनीय रिश्ते बनाना ताकि शोध और

सामाजिक काम के परस्पर सम्बन्ध बनें। सामाजिक नागरिक संस्थाओं के रूप में समुदाय के साथ सघन रूप से काम करते हुए ऐसे विषय और अनुभव उपलब्ध होते हैं, जिन पर शोध और अध्ययन होना चाहिए। लेकिन अगर शोध विशेषज्ञों से संवाद ही नहीं होगा, तो सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अनुभव महत्वपूर्ण साबित नहीं होंगे।

32) समानुभूति के बिना सामाजिक नागरिक पहल का औचित्य सीमित हो जाता है। किसी व्यक्ति या समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह न रखें या धारणा न बनाएं क्योंकि व्यक्ति जो भी व्यवहार करता है, उसके कुछ कारण होते हैं, कोई पृष्ठभूमि होती है। जब किसी भी व्यक्ति या समुदाय के प्रति कोई कठोर बात पैदा हो, तो सबसे पहले यह जानने की कोशिश करना चाहिए कि जो बात कही जा रही है या व्यवहार किया जा रहा है, उसके पीछे के कारण क्या हैं?

26) जिन संस्थाओं से पहचान बनती है, उनसे संवाद स्थापित करना/रिश्ते बनाना। मीडिया सामाजिक संस्थाओं के विषयों पर जनमत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए उसे यह जरूर जानना चाहिए कि सामाजिक संस्थाएं क्या कर रहीं है और किस उद्देश्य से कर रहीं हैं? इसी तरह से अगर आज छात्र–छात्राओं को यह पता होगा कि समाज के मुद्दे क्या हैं और सामाजिक संस्थाएं क्या पहल कर रहीं हैं, तो वे भी भविष्य में सामाजिक नागरिक कार्यकर्ता की भूमिका अपना सकते हैं।

30) इसी तरह जब आपकी संस्था के प्रति कोई दुर्भावनापूर्ण कार्यवाही की जाती है या आक्षेप लगाया जाता है, तब अन्य संस्थाओं को आपकी संस्था के पक्ष में खड़े होना चाहिए। लेकिन ऐसा तभी संभव होता है, जब संस्थाओं के बीच आपसी रिश्ते मजबूत होते हैं और परस्परता का भाव होता है।

28) अगर संस्था की पहल के बारे में लोगों को/समाज को जानकारी होगी, तभी तो विश्वसनीयता स्थापित होगी। यह एक विचार करने योग्य विषय है कि क्या सामाजिक नागरिक संस्थाएं अपने अनुभवों, सीखों और कार्यक्रमों के परिणामों का दस्तावेजीकरण करती हैं? क्या उन पर बातचीत की जाती है?

31) कहीं ऐसा तो नहीं है कि संस्थागत कार्यों में गरिमा और समानता की बात की जाती है, लेकिन संस्था से बाहर निकलते ही अन्य लोगों के साथ जाति, लिंग, धर्म या पहचान के आधार भेदभाव किया जाता हो। सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते अपने निजी जीवन में भी वही भाषा बोली और व्यवहार किया जाना चाहिए, जिसकी वकालत समाज या सरकार के लिए की जाती है।

33) सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हम जो व्यवहार करते हैं या सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हम जिस तरह की व्यवस्था का पालन करते हैं, उससे हमारी पहचान और चरित्र का प्रदर्शन होता है। अपनी किताबों या रिपोर्ट में हम कितने ही अच्छे विचार लिखें, लेकिन अगर वह व्यवहार में नहीं है, तो उसके बारे में सबको पता लग ही जाता है।

24) समाज में, देश में निरन्तर कुछ घटनाएं घटती रहती हैं। राजनीतिक दल अपनी विचारधाराओं के आधार पर ऐसे काम करते हैं या बहस छेड़ते हैं, जो हमारे दृष्टिकोण से बेहतर समाज के लिए ठीक नहीं होते हैं। हो सकता है कि ऐसी घटनाएं संस्था के कार्यक्षेत्र में न घटी हों, लेकिन फिर भी उनका असर समुदाय पर पड़ता ही है। हर वह विषय, बहस या घटना, जो संस्था के व्यापक सपने, उद्देश्य या कार्यक्रम को प्रभावित करती हो, उस पर संस्थाओं को अपना पक्ष जरूर रखना चाहिए।

▲▲▲

रणनीतिक संचार के आयाम

42) अन्य सामाजिक संस्थाओं और नेटवर्क से सक्रिय रूप से जुड़ना ताकि सामाजिक संस्थाओं की शक्ति आकार लें। हर कालखंड में ये अनुभव सामने आये हैं कि सामाजिक नागरिक संस्थाएं समाज और व्यवस्था की विसंगतियों को दूर करने और ऐसी व्यवस्था के निर्माण की संकल्पना रखती हैं, जिसमें सभी को गरिमा के साथ जीवन, न्याय, बराबरी और स्वतंत्रता प्राप्त हो सके। यह संकल्पना सामाजिक और राज्य की व्यवस्थाओं की सोच से नहीं जुड़ती हैं। ऐसे में सामाजिक नागरिक संस्थाओं की प्रासंगिकता और मंशों पर सवाल खड़े किये जाते हैं। तब सामाजिक नागरिक संस्थाओं का आपसी सहकार बेहद महत्वपूर्ण होता है। इसके अलावा भी अपनी–अपनी सीखों और उपलब्धियों के ज्ञान को साझा करने के साथ संस्थाओं के बीच समन्वय होना बेहतर विकल्प है।

36) अपने अनुभवों और कहानियों को अपने बीच ही दोहराते रहना/तैयार रहना। ज्यादातर मामलों में हमें बहुत तैयारी के मौके नहीं मिलते, यही कारण है कि हमेशा अपनी कहानी के कहने की तैयारी रखना चाहिए।

38) इसका मतलब है अपने कार्यक्रम से जुड़ी संस्थाओं/इकाइयों से आगे जाकर अन्य संस्थाओं से रिश्ते बनाना। सामाजिक नागरिक संस्थाओं के अनुभवों और सीखों को लोकनीति के व्यापक पटल पर लाने के लिए ऐसे समूहों के साथ अनिवार्य होता है।

39) इसका मतलब है समस्या के साथ ही मूल्य आधारित समाधान की बात करना। सामाजिक नागरिक संस्थाओं के भीतर यह सजगता होना चाहिए कि समस्याओं के गहरे विश्लेषण के साथ ही समाधान की भी गहरी पड़ताल हो। जब भी समस्याओं के बार में बात हो, इसके साथ ही रास्ते क्या हैं, यह भी पेश किया जाना चाहिए।

40) युवाओं के साथ संवाद करना ताकि वे भी सामाजिक पहल से जुड़ें, उन्हें समाज के मुद्दों की जानकारी हो और वे जान पायें कि बेहतर समाज और शासन व्यवस्था के निर्माण में सामाजिक नागरिक संस्थाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

41) सामाजिक कार्यकर्ता या सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हम जिस विषय पर काम कर रहे हैं, उसके बारे में किसी भी अन्य संस्था, सरकार या मीडिया के प्रतिनिधि की यह अपेक्षा रहती है कि हम उन्हें उस विषय या समस्या पर समझ विकसित करने में सहयोग कर पायेंगे। हमें अपने विषय पर नियमित रूप से जानकारी और विश्लेषणपरक दस्तावेज बनाते रहने की जरूरत होती है।

35) सामाजिक कार्यकर्ता या सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हम जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उन शब्दों के अर्थों, सन्दर्भ और सामाजिक–आर्थिक–तकनीकी सन्दर्भों के बारे में जानकारी होना चाहिए। अगर सामाजिक कार्यकर्ता अपने शब्दों के अर्थ नहीं जानेगा, तो उसके संवाद में प्रभाव भी नहीं होगा। जब यह कहा जाता है कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं की तमाम कोशिशों के बाद भी असर नहीं पद रहा है, तब संभवतः इसके पीछे यह भी एक कारण हो सकता है।

43) जब भी अन्य समूहों/व्यक्तियों के साथ संवाद करें, तब संस्था की पहचान, भूमिका, मूल्यों, मकसद/उद्देश्यों और सपने के बारे में प्रभावी ढंग से सन्देश दें। यह ध्यान रखना जरूरी है कि लोग या जन प्रतिनिधि सामाजिक नागरिक संस्थाओं के कार्यक्रमों से सीधे नहीं जुड़ते हैं। लोग हमेशा सपने से, लक्ष्य से जुड़ते हैं। अगर सपने से जुड़ाव स्थापित हो जाता है, तभी कार्यक्रम से जुड़ाव बनता है। अतः सामाजिक नागरिक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को अपने बड़े लक्ष्य, अपने सपने के बारे में बात करते रहना होगा।

37) लक्षित समूहों से बाहर जाकर संचार और संवाद करना एक महत्वपूर्ण तैयारी है। जिन विषयों पर सामाजिक नागरिक संस्थाएं काम कर रहीं हैं, उन विषयों के बारे में माध्यम वर्ग की संवेदनशीलता भी विकसित होना चाहिए, लोक प्रशासन

की भी, अकादमिक संस्थाओं की भी, जन प्रतिनिधियों की भी। ढांचागत बदलाव के लिए विविध समूहों के साथ नजरिया आधारित संवाद जरूरी है।

46) संक्षेप में अपनी बात रखने के लिए तैयार होना। इसके लिए बहुत तैयारी, प्रशिक्षण और अभ्यास की जरूरत होती है। सामाजिक नागरिक कार्यकर्ताओं को अकसर ऐसे अवसर मिलते हैं, जब उन्हें अपनी बात कहने का मौका मिल जाता है, लेकिन उसकी तैयारी के लिए समय नहीं मिलता या फिर प्रस्तुति के लिए बहुत कम समय होता है। ऐसे अवसर बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

44) अन्य संस्थाओं के साथ नियमित रूप से संवाद जरूरी है ताकि वे आपसे खुद को जुड़ा हुआ महसूस कर सकें। नियमित संचार आपसी जुड़ाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने कार्यक्रमों और सीखों को गोपनीय रखने की प्रवृत्ति लोक हित के नज़रिए से सकारात्मक नहीं कही जा सकती है।

50) केवल लेखन ही कहानी कहने का माध्यम नहीं है। अब हर एक व्यक्ति/हर कार्यकर्ता एक फिल्मकार है। हमारी संस्था के सदस्यों/साथियों को अपने स्मार्ट फोन से ही फिल्म बनाना आना चाहिए। प्रश्न यह है कि समुदाय के बीच और समुदाय के साथ काम करते हुए जो अनुभव जन्म ले रहे हैं, जो अनुभूतियां हो रहीं हैं, क्या उन्हें कोई बाहरी व्यक्ति दर्ज करेगा? संचार हमेशा से सामाजिक नागरिक पहल का अहम् भाग रहा है।

47) सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण मंच है। इस मंच के रचनात्मक और सकारात्मक उपयोग के लिए संस्था को गंभीर रूप से विचार विमर्श करके स्पष्ट नीति और व्यवस्था बनाना चाहिए। संचार के मनौविज्ञान के अनुसार सार्वजनिक पटल पर प्रस्तुत किये गए विचार व्यक्ति/संस्था की मनोवृत्ति के परिचायक होते हैं। इससे विचार का विस्तार होता है और विचार का विस्तार ही सामाजिक संरचना को अपेक्षित स्वरुप प्रदान करता है।

48) संस्था को अपने अनुभवों और सीखों को साझा करने के लिए सदैव तैयार रहना होता है। इसके लिए जरूरी होता है कि संस्था केवल गतिविधियों की जानकारी ही दर्ज करने की व्यवस्था न बनाए। इसके साथ ही सीखों और अनुभवों के बारे में भी गहराई से बात करने, फीडबैक और चर्चा की व्यवस्था होना चाहिए।

55) सामाजिक नागरिक संस्था जो काम कर रही है, उनमें अलग-अलग स्तरों पर नवाचार किये जाते हैं। स्थानीय सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप रणनीतियां अपनाई जाती हैं। इन नवाचारों की सीखों और अध्ययन को सरकार, अन्य संस्थाओं, समुदाय, नीति निर्मातों से साझा किया जाना चाहिए। इजब एक नवाचार के अनुभव साझा किये जाते हैं, तब उससे दूसरे नवाचार को आधार मिलता है। और इससे न केवल उन्हें समाज के विषयों के बारे में समझ विकसित करने में मदद मिलेगी, बल्कि सामाजिक नागरिक संस्थाओं के बारे में उनके दृष्टिकोण और समझ का विकास होगा।

49) अपनी बात को कहने में तथ्यों और आंकड़ों का इस्तेमाल करना चाहिए। इनसे हम अपनी बात को ज्यादा प्रामाणिक तरीके से पेश कर पाते हैं। इससे सामाजिक कार्यकर्ताओं को स्वयं भी समस्या/विषय के फैलाव का अनुमान लगता है और लक्षित समूह को भी विषय की व्यापकता के बारे में पता चल पाता है। तथ्यों और आंकड़ों के प्रयोग से धारणाओं और पूर्वाग्रहों का प्रभाव कम होता जाता है।

51) संस्था को अपनी टीम की संचार और संवाद सम्बन्धी क्षमता वृद्धि करना जरूरी है। संस्था में सीखने और सुनने का कौशल विकसित करना प्रभावी संवाद और प्रभावी कहानी कहने के लिए जरूरी है। जब सबकी सुनते हैं, तब ही वास्तविक शब्द मिलते हैं, जानकारियां मिलती हैं और उन परिस्थितियों का अहसास पैदा होता है, जिनमें सामाजिक संस्थाएं अपनी भूमिका निभा रही हैं।

52) अपने व्यवहार और संस्थागत व्यवस्था से क्या सन्देश जा रहे हैं, इसके बारे में विचार करते रहना चाहिए। एक समूह के भीतर उसके सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध कैसे हैं? क्या समूह के सदस्यों के बीच परस्पर स्वीकार्यता है? क्या संस्था में असहमति के लिए स्थान है? क्या संस्था के भीतर पारदर्शिता है? क्या लैंगिक समता और समानता व्यवहार में है? इन बातों की प्रदर्शनी से बहुत सीमित असर होता है, व्यापक असर होता है इन मूल्यों को अपनाए जाने से।

45) संस्था के साथ जुड़े साथियों के प्रस्तुति/कहानी कहने के कौशल के विकास के लिए विशेष पहल करना जरूरी होता है। यह कौशल अपने आप विकसित नहीं होता है। प्रभावी प्रस्तुतिकरण कोई जन्मजात कौशल नहीं है, यह एक ऐसा कौशल है, जो हर व्यक्ति को उपलब्ध होता है। महत्वपूर्ण यह है कि इस कौशल का और विकास करने के लिए क्या प्रयास किये जाते हैं। सामाजिक नागरिक संस्थाओं को संस्थागत संस्कृति में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समूह के सभी सदस्य इस कौशल का विकास कर सकें।

53) सामाजिक नागरिक संस्थाओं को एक दूसरे के साथ जुड़ाव बनाने की प्रक्रिया में जाना चाहिए। इससे उनकी वैचारिक और रणनीतिक क्षमता का विकास होता है। इतना ही नहीं समाज के लिए जो काम किये जा रहे हैं, उन्हें अनुभवों और सीखों के आदान प्रदान से ज्यादा प्रभावी बनाया जा सकता है।

56) सामाजिक नागरिक पहल के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये संसाधन उन व्यक्तियों/संस्थाओं से प्राप्त होते हैं, जो संपन्न तो हैं और साथ ही समाज को बेहतर बनाने में भी अपना योगदान देना चाहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि हमारी संस्थाएं केवल सीमित संस्थाओं तक ही पहुंच रखती हैं और ऐसे प्रयास नहीं कर रहीं है, जिससे ऐसे व्यक्तियों/संस्थाओं की पहचान की जा सके, जो संस्थाओं को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं।

57) यह ध्यान रखना होगा कि जब कोई भी व्यक्ति/संस्था सामाजिक नागरिक पहल के लिए योगदान करते हैं, तब यह उनके

लिए निवेश होता है। वे गंभीरता से यह सोचते हैं कि उनके योगदान से कुछ ख़ास परिणाम निकल कर आयेंगे। वे कई तरह की सूचनाएं/जानकारियां चाहते हैं। वे हमारी समझ और कार्यक्रम के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट होना चाहते हैं। इसके लिए बहुत जरूरी होता है कि संस्था के भीतर कार्यक्रमों और मुद्दों के बारे में विश्लेष्णात्मक चर्चाएं हों।

60) यह एक वास्तविकता है कि देश और पूरी दुनिया में तकनीक, समस्याओं के प्रति नज़रिया, समस्याओं को हल करने के तरीके, भाषा, राजनीतिक दृष्टिकोण बदल रहे हैं। सामाजिक नागरिक संस्थाओं के लिए यह जरूरी होता है कि अपने मुद्दों और विषयों के बारे में पहले से बनी हुई समझ, वर्तमान में अपनाई जा रही समझ के बारे में विचार करें और वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से यह समझने की कोशिश करें कि आने वाले सालों में क्या स्थिति बनेगी? किस तरह की परिस्थितियां हो सकती हैं? किस तरह की नीतियां या नीतिगत बहस हो सकती है? समाज में किस तरह के बदलाव हो सकते हैं? और इस विश्लेषण के आधार पर अपने लक्ष्यों और मूल्यों को ध्यान में रखते हुए संस्थाओं को भविष्य की कार्ययोजना बनाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो वह किसी भी समय अपने आप को असुरक्षा और अभाव की स्थिति में पा सकती है।

58) यह प्रश्न पूछना कि जो व्यक्ति/संस्था हमारे कार्यक्रम के लिए संसाधन उपलब्ध करवा रही है, उसे क्या हासिल होगा? उसे सामाजिक नागरिक कार्यक्रम के लिए क्यों योगदान देना चाहिए? ऐसे कारक कौन से हैं, जिनसे कोई भी योगदान देने के लिए तत्पर होगा? अगर हम यही बता पाने में सक्षम नहीं होंगे कि आखिर संस्था का उद्देश्य क्या है, उसके कार्यक्रमों के परिणाम क्या होंगे, तो कोई भी व्यक्ति/संस्था आर्थिक संसाधनों का योगदान क्यों देगी?

54) सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हम जो कार्यक्रम शुरू करते हैं, उनके साथ जिम्मेदारी और जवाबदेही होती है। कई विषय बहुत संवेदनशील होते हैं। इतना ही नहीं समुदाय भी यह भरोसा करता है कि संस्थाएं उनके जीवन की कठिनाइयों को दूर करने में मदद करेंगी। इस पृष्ठभूमि में जरूरी होता है कि कर परियोजना/हर कार्यक्रम को हर उस व्यक्ति और संस्था

की मदद से आकार दिया जाना चाहिए, तो उस विषय पर अनुभव और समझ रखता है। यह आंकलन जरूर करना चाहिए कि अन्य संस्थाओं से साथ कितना संवाद किया जा रहा है?

59) अपने कार्यक्रमों के लिए आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए जरूरी होता है सामाजिक नागरिक संस्थाएं यह जानें कि उनके द्वारा जिन विषयों पर काम किया जा रहा है, उनके बारे में व्यापक समाज क्या सोचता है? उन विषयों को कैसे परिभाषित करता है? उसका नज़रिया क्या है? वह इन मुद्दों/समस्याओं के क्या समाधान सोचता है? क्या हम उनकी समझ से जुड़ पाते हैं? अगर भाषा और नज़रिए में ही सामंजस्य नहीं होगा, तो यह तय है कि हम अन्य समूहों को अपने लक्ष्य और कार्यक्रम से जोड़ नहीं पाएंगे?

▲▲▲

प्रिय पाठक,

इस कार्य पुस्तिका को पूरा करने के बाद, क्या आप कुछ समय रुक कर उन मुख्य निष्कर्षों को लिखना चाहेंगे जिन पर आप आगे काम करना पसंद करेंगे, ताकि आप और आपके संगठन की भूमिकाओं के दृष्टिकोण और समृद्ध बन सकें।

सत्य के साथ मेरे प्रयोग

''सिपाही आया, उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे धक्का देकर नीचे उतारा। मेरा सामान उतार लिया। मैंने दूसरे डिब्बे में जाने से इनकार कर दिया। ट्रेन चल दी। मैं वेटिंग रूम में बैठ गया। अपना हैंड बैग साथ में रखा। बाकी सामान को हाथ न लगाया। रेलवे वालों ने उसे कहीं रख दिया। सरदी का मौसम था। दक्षिण अफ्रीका की सर्दी ऊँचाई वाले प्रदेशों में बहुत तेज होती है। मेरित्सबर्ग इसी प्रदेश में था। इससे ठण्ड खूब लगी। मेरा ओवरकोट मेरे सामान में था। पर सामान मांगने की हिम्मत न हुई। फिर अपमान हो तो? ठंड से मैं कांपता रहा। कमरे में दीया न था। आधी रात के करीब एक यात्री आया। जान पड़ा कि वह कुछ बात करना चाहता है, पर मैं बात करने की मनःस्थिति में न था। मैंने अपने धर्म का विचार किया - या तो मुझे अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए या लौट जाना चाहिए, नहीं तो जो अपमान हो, उसे सहकर प्रिटोरिया पहुंचना चाहिए और मुकदमा ख़त्म करके देश लौट जाना चाहिए। मुकदमा अधूरा छोड़कर भागना कायरता होगी। मुझे जो कष्ट सहना पडा, सो तो ऊपरी कष्ट है। वह गहराई तक पैठे हुए महारोग का लक्षण है। यह महारोग है रंग-द्वेष। यदि मुझमें इस गहरे रोग को मिटाने की शक्ति हो तो उस शक्ति का उपयोग मुझे करना चाहिए। ऐसा करते हुए स्वयं जो कष्ट सहने पड़ें, सो सब सहने चाहिए और उनका विरोध रंग-द्वेष को मिटाने की दृष्टि से ही करना चाहिए। यह निश्चय करके मैंने दूसरी ट्रेन से, जैसे भी हो, आगे जाने का फैसला किया।''

जब दक्षिण अफ्रीका में नस्लवादी भेदभाव की रीति-नीति के कारण मोहनदास करमचंद गांधी को ट्रेन से बाहर धकेला गया था, तब उनके मन में क्या चल रहा था? इसी घटना ने उन्हें देश-दुनिया के बदलाव के लिए अपनी भूमिका तय करने के लिए प्रेरित किया।

विकास संवाद

9 788199 258822